81

कभी न भुलाई जाने वाली रात

बाइबल पाठ #34

VII. यीशु की सेवकाई का अन्तिम सप्ताह (क्रमश:)।
  ज. शुक्रवार: यीशु की मृत्यु का दिन (क्रमश:)।
    1. अन्तिम भोज (क्रमश:)।
      ग. दीनता दिखाई गई (यूहन्ना 13:2-20)।
      घ. पकड़वाए जाने/इनकार होने की भविष्यवाणी हुई (मत्ती 26:21-25, 31-35; मरकुस 14:18-21, 27-31; लूका 22:21-23, 31-38; यूहन्ना 13:21-38)।
      ङ. प्रभु भोज की स्थापना हुई (मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)।

परिचय

यह रात कभी न भुलाई जाने वाली होनी थी। इसकी शुरुआत ऊपरी कमरे में यीशु और उसके चेलों के फसह का भोज खाने के साथ हुई थी। गतसमनी में प्रार्थनाओं के साथ यह रात जारी रही। रात भर की घटनाएं महायाजक के आंगन में यीशु के ठट्ठे भरे मुकदमे के साथ समाप्त हुईं। इस पाठ में फसह के पर्व के उस भोज से जुड़ी घटनाओं का पहला भाग दिया जाएगा। हमें उस यादगारी शाम की घटनाओं का क्रम ठीक-ठीक पता नहीं चल सकता।[1] नीचे दिया गया क्रम उन घटनाओं को क्रम में लाने का एक प्रयास है।[2]

चौंकाने वाला कार्य (यूहन्ना 13:2-20)

पिछला पाठ प्रेरितों में सबसे बड़ा होने की बहस के साथ समाप्त हुआ था (लूका 22:24)। भोज के दौरान उसी झगड़े से एक ही घटना पर ध्यान बंट गया होगा:

> यीशु ने ... भोजन पर से उठकर अपने कपड़े उतार दिए, और अंगोछा लेकर अपनी कमर बान्धी। तब बरतन में पानी भरकर चेलों के पांव धोने और जिस अंगोछे से उस की कमर बन्धी थी, उस से पोंछने लगा (यूहन्ना 13:3-5)।

उस समय, अतिथि के घर में प्रवेश करने पर उसके पांव धोना एक सामान्य प्रथा थी। आतिथ्य के इस कार्य से आगंतुक के पांवों को राहत तो मिलती ही थी, परन्तु इसका व्यावहारिक पहलू भी था। लोग खड़ावें पहनकर धूल भरी पगडंडियों पर चलते थे। खाने के लिए बैठने पर अतिथि के पांव एक-दूसरे के मुंह से अधिक दूर नहीं होते थे।[3]

प्रेरितों ने फसह का भोजन खाने की तैयारी में स्नान कर लिया होगा (देखें आयत 10); परन्तु ऊपरी कमरे के द्वार तक आते-आते, उनके पांव रास्ते की धूल और मिट्टी से गंदे हो गए होंगे। पांव धोने के लिए आवश्यक सामान वहां पर मौजूद था (आयतें 4, 5), परन्तु महान बनने की चिंता में वे अपने साथी चेलों के गंदे पांव धोने को तैयार नहीं थे। आखिर, यह सेवकों द्वारा किया जाने वाला काम जो था!

यीशु ने उन्हें पहले बताया था कि उसके राज्य में महान होने के लिए पदवी की नहीं, सेवा की आवश्यकता है। उसने कहा था, ''पर मैं तुम्हारे बीच में सेवक की नाईं हूं'' (लूका 22:27)। इस अवसर पर उसने सेवक का हीन काम खुद करके उन्हें दिखाया कि सेवा करना क्या होता है। उसने उनके पांव धोए।

यह बात कि जिनके पांव धोए गए उनमें यहूदा भी था, वचन में विशेष आकर्षण है (यूहन्ना 13:2, 10, 11, 18, 19)। ऐसा करके प्रभु ने दिखाया कि ''अपने शत्रुओं से प्रेम'' करने और उनका भला करने का क्या अर्थ है[4] (मत्ती 5:44, 45; देखें रोमियों 12:20)।

चेलों के पांव धोने के बाद मसीह ने उन्हें इस नमूने का पालन करने की चुनौती दी (यूहन्ना 13:14-17)। इसका अर्थ है कि वह पांव धोने को आराधना के एक भाग के रूप में किया जाने वाला संस्कार बना रहा था? नहीं। जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे ने लिखा है:

> यीशु ने पांव धोने की *रीति आरम्भ* नहीं की; उसने इसे पहले से उस देश की *प्रचलित* परम्परा पाया और इसका इस्तेमाल विनम्र सेवा का उचित ढंग बताने के सबसे उपयुक्त ढंग के रूप में किया। ... आतिथ्य के एक कार्य के रूप में पांव धोना कभी भी पश्चिमी लोगों की परम्परा नहीं थी और मसीह के इन शब्दों के कारण इसे अपनाना पूरी तरह से उसके अर्थ को नज़रअन्दाज़ करना है।[5]

जॉन एफ़. कार्टर ने लिखा है कि ''ऐसा कोई प्रमाण नहीं है कि नये नियम की कलीसियाओं ने कभी नियम के रूप में ऐसा [पांव धोना] किया हो।'' उसने लिखा, ''कलीसिया के इतिहास में ऐसे व्यवहार का पहली बार उल्लेख 306 ईस्वी के लगभग स्पेन के एलविरा में कौंसिल ऑफ़ बिशप्स की आज्ञा में मिलता है, जिसमें इसकी भर्त्सना की गई थी।''[6] एच. आई. हेस्टर ने कहा है, ''यीशु यहां प्रभु भोज जैसा कोई संस्कार आरम्भ नहीं कर रहा था, बल्कि सच्ची दीनता का सबक दे रहा था।''[7]

मसीह की दिलचस्पी मुख्यतया प्रेरितों के पांव की धूल नहीं, बल्कि उनके मनों की स्वार्थी अभिलाषा की मैल उतारना था। सुझाव दिया गया है कि यह घटना यहूदा तक

पहुंचने के लिए यीशु का अंतिम प्रयास हो सकती है। प्रभु ने यहूदा के पांव तो धो दिए, पर अफ़सोस कि उसका मन बिन धोए ही रह गया (13:27)।

चौंकाने वाली घोषणाएं (मत्ती 26:21-25, 31-35; मरकुस 14:18-21, 27-31; लूका 22:21-23, 31-38; यूहन्ना 13:18, 19, 21-30)

यहूदा के विषय में घोषणाएं (मत्ती 26:21-25; मरकुस 14:18-21; लूका 22:21-23; यूहन्ना 13:18, 19, 21-30)

चेलों के पांव धोने के बाद मसीह ने एक चौंकाने वाली घोषणा की कि वह पकड़वाया जाएगा, और यह कि उसका कोई निकट साथी ही उसे पकड़वाएगा। उसने कहा कि पवित्र शास्त्र की बात पूरी होगी कि ''जो मेरी रोटी खाता है, उसने मुझ पर लात उठाई'' (यूहन्ना 13:18; देखें भजन संहिता 41:9)। ''पूर्वी देशों में दो लोगों का एक ही थाली में खाने का अर्थ होता था कि उनमें मित्रता की कोई वाचा या शपथ है।[8] परन्तु यहूदा दाम लेकर यीशु को पकड़वाने के लिए शत्रुओं से समझौता करने के बाद भी प्रभु के साथ चुपके से इस पवित्र भोज में भाग ले रहा था।''[9]

मसीह ने कहा कि प्रेरितों को पकड़वाए जाने की बात ''उसके होने से पहिले तुम्हें जताए देता हूं कि यह जब हो जाए तो तुम विश्वास करो कि मैं वही हूं'' (यूहन्ना 13:19)। इस तथ्य से कि उसने पहले से उन्हें बता दिया था, फिर से इस बात की पुष्टि होनी थी कि वह परमेश्वर था। इससे यह आश्वासन देते हुए कि यह पकड़वाया जाना अचानक या उसकी योजनाओं में खलल डालने के लिए नहीं था, उनके विश्वास की भी रक्षा होनी थी।

''ये बातें कहकर यीशु आत्मा में व्याकुल हुआ'' (यूहन्ना 13:21क)। चेलों को पता नहीं था कि आगे कौन सी भयानक बातें होने वाली हैं, पर मसीह को सब मालूम था। उसे प्रेरितों की परिपक्वता की कमी का भी ध्यान था। इसके अलावा उसका मन यहूदा के धोखे से दुखी होना था।

यीशु ने बारहों को साफ़-साफ़ शब्दों में कह दिया: ''... तुम में से एक मुझे पकड़वाएगा'' (यूहन्ना 13:21ख; देखें मत्ती 26:21)। वे परेशान हो गए (यूहन्ना 13:22) और ''आपस में पूछताछ करने लगे, कि हम में से कौन है, जो यह काम करेगा?'' (लूका 22:23)। ''इस पर वे बहुत उदास हुए, और हर एक उस से पूछने लगा, हे गुरु, क्या वह मैं हूं?''[10] (मत्ती 26:22)। उन्हें लगा होगा कि ''इसका अर्थ है कि उनमें से कोई जानबूझकर कुछ ऐसा करेगा, जिससे वह शत्रुओं के हाथ लग सके।''[11] इसलिए हर कोई यही कहने लगा, ''निश्चय ही मैं ऐसा नहीं करूंगा!''

यूहन्ना जो यीशु के दाईं ओर था, पूछने लगा, ''हे प्रभु, वह कौन है?'' (यूहन्ना 13:23-25[12])। ''यीशु ने उत्तर दिया, 'जिसे मैं यह रोटी का टुकड़ा डुबोकर दूंगा, वही है।'[13] और उस ने टुकड़ा डुबोकर शमौन के पुत्र यहूदा इस्करियोती को दिया'' (यूहन्ना

13:25, 26; देखें मत्ती 26:23)।

कोई सोचेगा कि इससे अपराधी की पहचान तो हो चुकी होगी। परन्तु सब चेलों पर यह स्पष्ट नहीं हुआ था (यूहन्ना 13:28, 29)। यहूदा को पूरा सम्मान दिया जाता होगा। यहूदिया से अकेला प्रेरित होने के कारण, शायद वह दूसरे सब चेलों से अधिक पढ़ा-लिखा था। उसे उनका खजानची चुनकर सम्मान दिया गया था (यूहन्ना 13:29; यूहन्ना 12:6 भी देखें)। उसे उनके समूह की ओर से दान बांटने की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी दी गई थी (यूहन्ना 13:29)। उनमें से अधिकतर को लगता था कि यदि कोई चेला प्रभु के साथ *कभी विश्वासघात नहीं* करेगा, तो वह यहूदा ही है।

अधिकतर प्रेरितों को यीशु की बातों और कार्यों का महत्व समझ नहीं आया, पर यहूदा समझ गया था। फिर भी कपटपूर्वक उसने दूसरे प्रेरितों की तरह पूछा, ''हे रब्बी, क्या वह मैं हूं?'' (मत्ती 26:25) और मसीह ने उत्तर दिया, ''तू कह चुका''[14] (मत्ती 26:26क)। उसके षड्यन्त्र का इस प्रकार पता चल जाने से यहूदा को अन्दर तक हिल जाना चाहिए था; परन्तु यदि वह इससे घबराया भी तो उसने प्रकट नहीं होने दिया। जैसे कीचड़ हवा लगने से सूखकर अकड़ जाता है, वैसे ही यहूदा का मन यीशु द्वारा उसका षड़यन्त्र सामने लाने पर और कठोर हो गया (यूहन्ना 13:27क[15])।

मसीह ने यहूदा से कहा, ''जो तू करता है, तुरन्त कर'' (यूहन्ना 13:27ख)। यीशु ने धोखा देने वाले को पहले नहीं छोड़ना चाहा था, क्योंकि उसे उस रात बहुत काम करना था। अब वह उसे छोड़ सकता था, क्योंकि वह जानता था कि किए जाने वाले काम के लिए काफ़ी समय है। ''तब [यहूदा] ... तुरन्त बाहर चला गया,[16] और रात्रि का समय था''[17] (यूहन्ना 13:30)।[18]

कुछ लोगों ने यहूदा के विश्वासघात के कार्यों का बचाव करने का प्रयास किया है,[19] परन्तु मसीह ने कहा, ''... उस मनुष्य के लिए शोक है जिस के द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है: यदि उस मनुष्य का जन्म न होता, तो उसके लिए भला होता'' (मत्ती 26:24; देखें मरकुस 14:21)। मैक्गार्वे ने लिखा है, ''यीशु के शब्द यहूदा का बचाव करने वालों का मुंह बन्द कर देते हैं। जब न्यायाधीश ही दोष लगाते हुए बात करे, तो दोष को कम करने के लिए बहस करने की बात कौन सोच सकता है।''[20]

पतरस तथा अन्य प्रेरितों के विषय में घोषणाएं (मत्ती 26:31-35; मरकुस 14:27-31; लूका 22:31-38; यूहन्ना 13:31-38)

यहूदा के चले जाने के बाद (यूहन्ना 13:31क),[21] यीशु दूसरे प्रेरितों की ओर मुड़ा। उसने महिमा पाने की बात की[22] (यूहन्ना 13:31ख, 32) और कहा, ''हे बालको,[23] मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं'' (यूहन्ना 13:33क)। उसे बहुत काम करना था और समय बहुत कम बचा था!

उसने पहले कहे गए शब्द दोहराए (यूहन्ना 13:33ख; देखें यूहन्ना 7:33, 34; 8:21) और कहा, ''मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं, कि एक-दूसरे से प्रेम रखो: जैसा मैं ने तुम से

प्रेम रखा है, वैसा ही तुम भी एक-दूसरे से प्रम रखो'' (यूहन्ना 13:34)। ''एक नई आज्ञा'' यह केवल इसलिए नहीं थी कि यह दूसरों से प्रेम करने की आज्ञा थी, क्योंकि यह विचार तो सदियों पुराना था (देखें लैव्यव्यवस्था 19:18), बल्कि नई आज्ञा यह इसलिए थी, क्योंकि यीशु ने कहा कि यह *ऐसा प्रेम* होना था जो उसका अपने चेलों के लिए था: '' *जैसा मैं ने* तुम से प्रेम रखा है''! उसने आगे कहा, ''यदि आपस में प्रेम रखोगे तो इसी से सब जानेंगे, कि तुम मेरे चेले हो'' (यूहन्ना 13:35)। किसी ने कहा है कि लोगों को इस बात की परवाह नहीं होती कि आप को कितना ज्ञान है, जब तक उन्हें यह पता न हो कि आप उनकी परवाह करते हैं।

पतरस ने ''मैं और थोड़ी देर तुम्हारे पास हूं'' (यूहन्ना 13:33क) शब्दों से लेकर पूछा, ''हे प्रभु, तू कहां जाता है?'' (यूहन्ना 13:36क)। यीशु ने उत्तर दिया, ''जहां मैं जाता हूं, वहां तू अब मेरे पीछे आ नहीं सकता! परन्तु इस के बाद मेरे पीछे आएगा'' (यूहन्ना 13:36ख)। पतरस को समझ नहीं आई कि यीशु मरने की बात कर रहा था। इस प्रेरित ने पूछा, ''हे प्रभु, अभी मैं तेरे पीछे क्यों नहीं आ सकता? मैं तो तेरे लिए अपना प्राण भी दे दूंगा'' (यूहन्ना 13:37)।

पतरस को जवाब देते हुए मैं यीशु के शब्दों में कोमलता की कल्पना कर सकता हूं, ''शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है[24] कि गेहूं की नाईं फटके'' (लूका 22:31)। जैसे स्त्रियां कूड़ा-करकट निकालने के लिए गेहूं को फटकती[25] हैं; वैसे ही शैतान प्रेरितों को[26] उनमें से कूड़ा-करकट निकालने और उनसे लाभ उठाने के लिए उन्हें ''फटक'' रहा था। एक खोट उसने निकाल लिया था (यूहन्ना 13:2, 27); उसे और चाहिए था।

शैतान ने विशेष तौर पर शमौन पतरस पर निशाना साधा होगा, जो अगुआ और वक्ता था। यह जानते हुए यीशु ने पतरस से कहा, ''मैंने तेरे लिए विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहे: और जब तू फिरे,[27] तो अपने भाइयों को स्थिर करना'' (लूका 22:32)। पतरस ने आपत्ति की, ''हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन मरने को भी तैयार हूं'' (लूका 22:33)। मसीह ने यह कहते हुए अपना सिर हिलाया होगा, '' *क्या* तू मेरे लिए अपना प्राण देगा?'' (यूहन्ना 13:38क)। उसने दुखी होकर कहा, ''हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं, कि आज मुर्ग़ बांग न देगा जब तक तू तीन बार मेरा इनकार नहीं कर लेता कि मैं उसे नहीं जानता'' (लूका 22:34)।[28]

प्रभु दूसरे दस प्रेरितों की ओर मुड़ा: ''तुम *सब* आज ही रात को मेरे विषय में ठोकर खाओगे; क्योंकि लिखा है, कि मैं चरवाहे को मारूंगा; और झुण्ड की भेड़ें तितर-बितर हो जाएंगी'' (मत्ती 26:31; देखें जकर्याह 13:7)। यीशु ने और कहा, ''परन्तु मैं अपने जी उठने के बाद तुम से पहले गलील को जाऊंगा'' (मत्ती 26:32)। गलील की प्रतिज्ञा का एक नोट बना लें (देखें मत्ती 28:7, 10, 16; यूहन्ना 21:1)। अपने पुनरुत्थान के बाद, यीशु ने बिखरे हुए झुंड को इकट्ठा करने वाले चरवाहे की तरह गलील में अपने चेलों को इकट्ठे करना था।[29]

पतरस ने यीशु की बातें मानने से इनकार कर दिया। उसने घोषणा की, ''यदि *सब* तेरे

विषय में ठोकर खाएं तो खाएं, परन्तु *मैं* कभी भी ठोकर न खाऊंगा'' (मत्ती 26:33)। फिर प्रभु ने उसे बताया, ''मैं तुझ से सच कहता हूं, कि आज ही रात को मुर्गे के बांग देने से पहिले, तू तीन बार मुझ से मुकर जाएगा'' (मत्ती 26:34)। ''पर उसने और भी ज़ोर देकर कहा, यदि मुझे तेरे साथ मरना भी पड़े तौ भी तेरा इनकार कभी न करूंगा'' (मरकुस 14:31क)। ''ऐसा ही सब चेलों ने भी कहा'' (मत्ती 26:35ख)।

यह स्पष्ट था कि प्रेरित आने वाले कठिन समयों के लिए तैयार नहीं थे।[30] यीशु ने फिर से यशायाह 53:12 से उद्धृत करते हुए (लूका 22:37) इस बात की पुष्टि की कि वह मरेगा। उसने अपने चेलों को चेतावनी दी कि भविष्य में वे उस प्रकार ग्रहण किए जाने की उम्मीद नहीं पाएंगे, जैसे उन्हें पहले भेजे जाने पर ग्रहण किया गया था (लूका 22:35, 36; देखें मत्ती 10; लूका 10:1-16)।

उन्हें भविष्य के लिए तैयार होने की सलाह देते हुए, उसने तलवार खरीदने को कहा (लूका 22:36)। चेलों को लगा कि वह वास्तविक तलवारों की बात कर रहा है और वे कहने लगे कि हमारे पास पहले से दो हैं; यीशु ने कहा कि ये काफ़ी होंगी (लूका 22:38)। बारह लोगों को मुकाबला करने के लिए दो तलवारें काफ़ी नहीं होनी थीं, इसलिए उन्हें इस बात का संकेत मिल जाना चाहिए था कि मसीह के कहने का क्या अर्थ था।[31] परन्तु वे उसकी बातें समझ नहीं पाए (देखें लूका 22:49-51) वैसे ही जैसे वे यह नहीं समझ पाए कि उसने अपनी आने वाली मृत्यु के बारे में क्या कहा था।

एक शानदार प्रबन्ध (मत्ती 26:26-29; मरकुस 14:22-25; लूका 22:19, 20; 1 कुरिन्थियों 11:23-26)

फसह का पर्व निकट आने पर,[32] यीशु ने सदा के लिए याद रखे जाने वाले प्रभु भोज की स्थापना की।[33] ''जब वे खा रहे थे, तो यीशु ने रोटी ली और आशीष मांगकर तोड़ी,'' (मत्ती 26:26क; देखें मरकुस 14:22; लूका 22:19), जो फसह के दौरान इस्तेमाल होने वाली अखमीरी रोटी थी। ''और धन्यवाद करके उसे तोड़ा, और कहा; कि यह मेरी देह है, जो तुम्हारे लिए है: मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरिन्थियों 11:24)।

''यह मेरी देह है'' कहते हुए यीशु अलंकारिक भाषा का इस्तेमाल कर रहा था,[34] यह वही भाषा है, जिसका कोई अपने बच्चों के बच्चों की तस्वीर दिखाते हुए इस्तेमाल करके कहे, ''ये मेरे नाती-पोते हैं।'' मसीह कह रहा था कि रोटी उसकी देह *का प्रतीक* थी, जो शीघ्र ही रोमी क्रूस पर चढ़ाई जाने वाली थी।

''इसी रीति से उसने बियारी के पीछे कटोरा[35] भी लिया'' (1 कुरिन्थियों 11:25क)। यह कटोरा ''दाख के रस'' से भरा हुआ था (मत्ती 26:29)। ''फिर उस ने ... धन्यवाद किया, और उन्हें देकर कहा, तुम सब इस में से पीओ।[36] क्योंकि यह वाचा का मेरा वह लोहू है,[37] जो बहुतों के लिए पापों की क्षमा के निमित्त बहाया जाता है'' (मत्ती 26:27, 28; देखें मरकुस 14:24; लूका 22:20)। यह कहकर, यीशु ने प्रकट किया कि उसकी मृत्यु का मुख्य उद्देश्य उसकी इच्छा पूरी करने वालों के पापों की क्षमा सुरक्षित करना था (देखें

1 कुरिन्थियों 15:3; इफिसियों 1:7)।

उसने ग्यारह को निर्देश दिया, ''... मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' (1 कुरिन्थियों 11:25ख)। फिर उसने आगे कहा, ''दाख का यह रस उस दिन तक कभी न पीऊंगा, जब तक तुम्हारे साथ अपने पिता के राज्य में नया न पीऊं'' (मत्ती 26:29)। जैसा कि पहले ही कहा गया था, राज्य का सांसारिक रूप कलीसिया ही है। कलीसिया जब भी प्रभु भोज में भाग लेने के लिए इकट्ठी होती है, यह मसीह के साथ सहभागिता करती है। पौलुस ने लिखा है, ''वह धन्यवाद का कटोरा, जिस पर हम धन्यवाद करते हैं, क्या मसीह के लहू की सहभागिता नहीं? वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं, क्या वह मसीह की देह की सहभागिता नहीं?'' (1 कुरिन्थियों 10:16, 17)।

मसीह की इच्छा थी कि प्रभु-भोज उसके वापस आने तक निरन्तर उसके स्मरण के रूप में मनाया जाता रहे (1 कुरिन्थियों 11:26)। आरम्भिक कलीसिया सप्ताह के प्रत्येक पहले दिन इस यादगारी भोज में भाग लेती थी,[38] और आज के दिन तक लेती है।

सारांश

हमने ''कभी न भुलाई जाने वाली रात'' के पहले कुछ घण्टों को देखा है।[39] अगले पाठ में हम यूहन्ना 14-16 में यीशु के विदाई संदेश और यूहन्ना 17 में उसकी सिफ़ारिशी प्रार्थना का अध्ययन करते हुए उस यादगारी शाम पर विचार जारी रखेंगे। मुझे आशा है कि इस अध्ययन से आपको *अपने* जीवन में ''कभी न भुलाया जाने वाला दिन'' बनाने में सहायता मिली है।

टिप्पणियां

[1]सुसमाचार के वृत्तांतों की तुलना करें तो आप पाएंगे कि उनमें घटनाओं के क्रम में काफ़ी भिन्नता है। जैसा कि पहले कई बार कहा गया है, घटना के क्रम को इन लेखकों ने बड़ी प्राथमिकता नहीं दी, क्योंकि घटना का क्रमबद्ध लिखा जाना महत्वपूर्ण नहीं था।[2] कुछ सम्भावित भिन्नताओं को हम टिप्पणियों में देखेंगे। [3]''मसीह का जीवन, भाग 2'' पर पृष्ठ 141 में देखें। [4]यीशु द्वारा यहूदा के पांव धोने के समय उन चेलों को जिन्हें यहूदा पर संदेह नहीं था, यह सबक नहीं लगा होगा परन्तु आज हम समझ सकते हैं। [5]जे. डब्ल्यू. मैक्गर्वे एण्ड फिलिप वाई. पैंडलटन, *द फ़ोरफ़ोल्ड गॉस्पल ऑर ए हारमनी ऑफ़ द फ़ोर गॉस्पल्स* (सिंसिनटी: स्टैंडर्ड पब्लिशिंग कं., 1914), 650. [6]जॉन फ्रैंक्लिन कार्टर, *ए लेमैन'स हारमनी ऑफ़ द गॉस्पल्स* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1961), 285-86. कार्टर ने यह निष्कर्ष निकालने के लिए कि पांव धोना कभी भी ''कलीसिया की रीति'' नहीं, ये तीन कारण दिए। उसने एल्बर्ट हैनरी न्यू मैन, *ए मैनुअल ऑफ़ चर्च हिस्टरी* (फिलाडेल्फिया: अमेरिकन बैपटिस्ट पब्लिकेशन्स सोसायटी, 1904), 1:140 को उद्धृत किया। [7]एच. आई. हेस्टर, *द हार्ट ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट* (लिबर्टी, मिज़ोरी: क्वालिटी प्रैस, 1963), 197. [8]इसके कई संकेत नये नियम में दिए गए हैं। उदाहरण के लिए, देखें प्रकाशितवाक्य 3:20. [9]कार्टर, 287-88. [10]मूल शास्त्र का अनुवाद हो सकता है, ''हे प्रभु, क्या वह मैं हूं?'' परन्तु यूनानी में प्रश्न के रूप से नकारात्मक उत्तर का संकेत मिलता है। NASB में है ''निश्चय ही, प्रभु मैं वह नहीं हूं।''

[11]कार्टर, 288. [12]बहुत से लेखकों का मानना है कि ''जिससे यीशु प्रेम रखता था'' यूहन्ना ने अपने लिए लिखा। [13]मैक्गर्वे के अनुसार, निवाला डुबोकर अतिथि को देना सम्मान का सूचक माना जाता था (मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 653)। [14]''तू कह चुका'' हां में हां मिलाने के लिए ज़ोर देने का ढंग था (देखें मत्ती 26:64)। जहां मैं रहता हूं वहां हम इसे इस प्रकार कहते हैं, ''*तुम ही* कह रहे हो!'' [15]यह पहले कहा गया था कि ''शैतान ने यहूदा में समाकर'' उसे सभा के पास जाने के लिए उकसाया (लूका 22:3, 4)। यहां यह कहा गया है कि शैतान फिर उस ''में समाया।'' यह सम्भव है कि यहूदा का मन कुछ समय के लिए यीशु की बातों और कामों से पिघल गया हो, पर फिर उसने दोबारा शैतान की बात मान ली। [16]कुछ लोगों का अनुमान है कि वह ''पर्व के लिए'' सामान खरीदने गया था (यूहन्ना 13:29)। एक दिन के फसह के पर्व के बाद सप्ताह भर चलने वाला अखमीरी रोटी का पर्व था। शायद उन्होंने सोचा कि यहूदा अगले पर्व के लिए तैयारी कर रहा है। [17]''यद्यपि यह वाक्य पढ़ने से लगता है कि यह केवल दिन के समय के बारे में है, परन्तु लगभग सभी टीकाकार इसके भयानक बल को महसूस करते हैं।... [हैनरी] एल्फोर्ड कहता है, 'मैं [फ्रैडरिक बी.] मेयर के साथ महसूस करता हूं कि यह शब्द कि ''रात्रि का समय था'' भयभीत करने वाला है' '' (मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 654)। [18]लूका के वृत्तांत से संकेत मिलता है कि यहूदा पर प्रभु भोज की स्थापना *के बाद* दोष लगाया गया था (लूका 22:19-23), जबकि मत्ती और मरकुस उस यादगारी की स्थापना से *पहले* उस दोष को लिखते हैं (मत्ती 26:25, 26; मरकुस 14:21, 22)। हमारे अध्ययन में, मत्ती और मरकुस के कालक्रम में आगे यह दावा है कि यहूदा यीशु द्वारा उसके बारे में बताने के थोड़ी देर बाद चला गया। [19]पृष्ठ 34 से आरम्भ पाठ ''तैयार होना'' देखें। [20]मैक्गर्वे एण्ड पैंडलटन, 653.

[21]यह स्पष्ट नहीं है कि यीशु ने कब भविष्यवाणी की कि पतरस उसका इनकार करेगा। लूका और यूहन्ना ने इस भविष्यवाणी को (लूका 22:34; यूहन्ना 13:38) यीशु और अन्यों के ऊपरी कमरे से जाने से *पहले* लिखा है (लूका 22:39; यूहन्ना 14:31ग)। मत्ती और मरकुस के अनुसार, यह उनके कमरे से जाने के *बाद* हुई (मत्ती 26:30-34; मरकुस 14:26-30)। मैंने ''किसी समय'' रखा। हो सकता है कि यह भविष्यवाणी बल देने के लिए दो बार की गई हो, एक बार कमरे से निकलने से पहले और एक बार उसके बाद। यदि ऐसा हुआ भी, तो एक जैसी भविष्यवाणियों का एक ही समय में अध्ययन किया जा सकता है। [22]यह उसकी मृत्यु, गाड़े जाने तथा जी उठने का अलंकारिक हवाला था (देखें यूहन्ना 7:39; 12:16, 23, 28)। [23]जहां तक हम जानते हैं, यीशु ने केवल यहीं पर मोह के इस शब्द का इस्तेमाल किया। यह यूहन्ना का पसंदीदा बन गया (1 यूहन्ना 2:1, 12, 28; 3:7, 18; 4:4; 5:21)। [24]बाइबल के अनुसार, शैतान को सीमित किया गया है और वह केवल वही कर सकता है, जिसकी परमेश्वर अनुमति दे (देखें अय्यूब 1 और 2)। यह ''मांसल'' विषय है (इब्रानियों 5:12-14); इसकी चर्चा के लिए आवश्यकता के अनुसार निर्णय लें। [25]हम में से कई लोगों को स्त्रियों द्वारा घरेलू चक्की में आटा पीसने की बात याद होगी, पर नई पीढ़ी को बताना पड़ेगा। हमारे यहां पैक किया हुआ अच्छी क्वालिटी का आटा और मिक्स किए हुए आटे से चक्कियों की बात पुराने समय की हो गई है। [26]लूका 22:31 में ''तुम'' शब्द यूनानी शास्त्र में बहुवचन में है। [27]KJV में ''परिवर्तित हो'' है। परिवर्तित होना किसी वस्तु के किसी दूसरी ''में बदलने'' की तरह है। इस वाक्यांश का इस्तेमाल करें तो ''जब तू दोबारा मुड़े'' कहकर यीशु ने दृढ़ता से कहा कि पतरस का गिरना अन्तिम नहीं होना था। [28]मत्ती, लूका और यूहन्ना ने मुर्गे के केवल एक बांग देने की बात की है (मत्ती 26:34; लूका 22:34; यूहन्ना 13:38) जबकि मरकुस ने दो बार (मरकुस 14:30)। दूसरी आयतों की तरह जहां किसी लेखक ने किसी बात के दो बार और दूसरे ने केवल दो में से एक बार और किसी तथा ने केवल एक बार उल्लेख किया (उदाहरण के लिए, मत्ती 20:30 और लूका 18:35), यह अन्तर महत्वहीन है। इनमें कोई विरोधाभास नहीं है: जब आपके पास दो हों, तो एक भी होता है। मरकुस ने केवल अतिरिक्त विवरण जोड़ा जिसे दूसरे लेखकों द्वारा नहीं लिखा गया। यह भिन्नता फिर देखी जाएगी जब हम मसीह के पतरस के इनकार का अध्ययन करेंगे। [29]एक ही बार में यीशु का पांच सौ से अधिक लोगों को दिखाई देना (1 कुरिन्थियों 15:6) सम्भवतया गलील में हुआ। [30]जहां मैं रहता हूं वहां हम कहेंगे कि उन्होंने ''इनकार'' कर दिया।

[31]यीशु ने पहले सुसमाचार के कारण उठने वाले विवाद के लिए ''तलवार'' शब्द का इस्तेमाल किया

था (मत्ती 10:34)। वह अपने चेलों को आने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए तैयार कर रहा था। [32]संक्षेप में शाम के किस समय भोज की स्थापना की गई, स्पष्ट नहीं है, जबकि मत्ती और मरकुस ने लिखा है कि ''जब वे खा रहे थे'' (मत्ती 26:26; मरकुस 14:22)। पौलुस ने संकेत दिया है कि यह ''भोज के बाद'' था। (1 कुरिन्थियों 11:25)। यह स्पष्टतया फसह के पर्व के अन्त के निकट या अन्त में है। [33]प्रभु भोज की स्थापना तथा इस यादगारी भोज की अतिरिक्त जानकारी के लिए, इस पुस्तक में पृष्ठ 161 पर ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' पाठ देखें। [34]इस अलंकार को ''रूपक'' कहा जाता है। रूपक एक सामान्य अलंकार है, जिसमें किसी बात की तुलना किसी दूसरी से ''जैसे'' या ''की तरह'' शब्दों का इस्तेमाल किए बिना संक्षेप में की जाती है। बाइबल रूपकों से भरी पड़ी है। उदाहरण के लिए, यीशु ने हेरोदेस को लोमड़ी कहा (लूका 13:31, 32)। उसने यह नहीं कहा कि हेरोदेस लोमड़ी *जैसा* था (जिसे उपमा कहा जाएगा), बल्कि उसने कहा कि वह एक लोमड़ी *था*। [35]कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि यह फसह के पर्व का तीसरा कटोरा था, जिससे पारम्परिक रूप से इस्राएलियों को निर्गमन 6:6, 7 की प्रतिज्ञा याद दिलाई जाती थी: ''मैं तुम्हें छुड़ा लूंगा।'' पुराने नियम की उस प्रतिज्ञा की शब्दावली प्रभु भोज के लिए उपयुक्त है, परन्तु इसे इस विचार के साथ मिलाना कठिन है कि यह पौलुस की बात वाले चार कटोरों में से तीसरा था कि जो यीशु ने, ''भोज के पश्चात'' लिया (1 कुरिन्थियों 11:35)। [36]इसका अर्थ यह नहीं है कि ''कटोरे को खाली कर दो,'' बल्कि यह है कि ''सभी इसमें से पियो।'' [37]पुरानी और नई दोनों वाचाओं (नियमों) को लहू बहाने से बांधा गया था (देख इब्रानियों 9:18, 20, 22; 10:29)। [38]पृष्ठ 161 पर ''मेरे स्मरण के लिए यही किया करो'' पाठ में चर्चा देखें। [39]फसह का भोजन आम तौर पर दो तीन घण्टे तक रहता था।